जिनभाषित २००७ ११ (फोल्डर नं. ०२४३२२)

सम्पादक – प्रो. रतनचन्द्र जैन

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय : हमारी परम्परा पुरुषार्थ की ----------२
पिच्छिका-परिवर्तन : आवश्यकता और उद्देश्य : मुनि श्री समतासागर जी ---------- ४
भगवान् पार्श्वनाथ का विश्वव्यापक प्रभाव : मुनि श्री नमिसागर जी ---------- ६
एक ऐतिहासिक प्रवचन :क्षु. श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी ---------- ९
जैन परम्परासम्मत 'ओम्' का प्रतीक चिह्न ---------- १५
जर्मनी में जैनधर्म के कुछ अध्येता : डो० जगदिशचन्द्र जैन ---------- १६
ख्याति पूजालाभ के लिए मंत्रतंत्रादि का प्रयोग मुनिधर्म नहीं : ब्र.अमरचन्द्र जैन ---------- २०
स्व० पं० नाथूलाल जी शास्त्री : माणिकचंद जैन---------- २२
बुन्देलखण्ड और आचार्य श्री विद्यासागर जी : मालती मडबैया ---------- २५
जीज्ञासा-समाधान : पं.रतनलाल बैनाडा ---------- २७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org